पाठ 3 **अक्टूबर 13-19**

"कि वे सब एक हो"

सब्त अपराह्न **अक्टूबर 13**

इस सप्ताह के पाठ के लिए पढ़ें : यूहन्ना 17: 1-26, 1यूहन्ना 5: 19, यूहन्ना 13: 18-30, यूहन्ना 5: 20-23, मार्क० 9: 38-41, प्रका० 18: 4, 1यूहन्ना 2: 3-6 .

याद वचन: *"मैं केवल इन्हीं के लिये विनती नहीं करता, परन्तु उनके लिये भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हों। जैसा तू हे पिता मुझ में हैं, और मैं तुझ में हूँ, वैसे ही वे भी हममें हों, इसलिये कि जगत् प्रतीति करे, कि तू ही ने मुझे भेजा" (यूहन्ना 17: 20-21)।*

यूहन्ना का सुसमाचार यीशु के तत्कालिक परवाह को बतलाता है जब उसका विश्वासघात होना और मृत्यु दूर क्षितिज में धुंधला दिख रहा था। पाँच निर्णायक अध्यायों में हम यीशु के अंतिम निर्देश के वचन को पाते हैं, (यूहन्ना 13-17) यह "महा-याजकीय प्रार्थना" के साथ समाप्त होता है (यूहन्ना 17)।

यह उपयुक्त पद हमारे प्रभु यीशु के लिए इस प्रार्थना में स्वयं को बलिदान हेतु पवित्र करने के लिए है जिसमें वह एक साथ याजक और शिकार (बलि) होता है। साथ ही साथ उनकी ओर यह एक शुद्धिकरण की प्रार्थना है जिनके लिए बलिदान दिया जाना है- चेले जो ऊपरी कोठरी में मौजूद थे और जो बाद में अपनी गवाही के द्वारा विश्वास में आ सकते थे।"- F.F. Bruce, The Gospel of John, P. 328.

इस प्रार्थना के केन्द्र में यीशु की परवाह अपने चेलों के बीच एकता के लिए है जो बाद में उस पर विश्वास कर सकते थे। यह उसकी प्रार्थना का मुख्य विषय था: "मैं उनके लिये विनती करता हूँ; संसार के लिये विनती नहीं करता परन्तु उन्हीं के लिये जिन्हें तूने मुझे दिया है, क्योंकि वे तेरे हैं; और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा है, और जो तेरा है वह मेरा है, और इनसे मेरी महिमा प्रगट हुई है" (यूहन्ना 17: 9-10)।

इस प्रार्थना में सतर्कता पूर्वक ध्यान दिये बिना कलीसिया में एकता, मसीह में हमारी एकता पर अर्थपूर्ण चर्चा अधूरी हो सकती है। यीशु ने किस निमित प्रार्थना की, किसके लिए प्रार्थना की, और आज हमारे लिये उसकी प्रार्थना का क्या तात्पर्य है?

---

* सब्त, अक्टूबर 20 की तैयारी के लिये इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

यीशु अपने लिये प्रार्थना करता है

महा-याजकीय प्रार्थना तीन भागों में बांटा गया है। प्रथम, यीशु अपने लिये प्रार्थना करता है (यूहन्ना 17: 1-5), तब अपने चेलों के लिये (यूहन्ना 17: 6-19), और आखिरकार उनके लिये जो बाद में उस पर विश्वास करेंगे (यूहन्ना 17: 20-26)।

पढ़ें यूहन्ना 17: 1-5, उसकी प्रार्थना का आशय क्या है, और हमारे लिये इसका क्या अर्थ है ?

_____

_____

यीशु पहले अपने लिये मध्यस्थ करता है। यूहन्ना के सुसमाचार में पहले घटित घटनाओं में यीशु ने संकेत दिया था कि उसकी घड़ी अभी पहुँची नहीं थी (यूहन्ना 2: 4, 7: 30, 8: 20)। परन्तु अब वह जानता है कि उसके बलि होने का समय यहाँ है। उसके पार्थिव जीवन के नाटकीय निष्कर्ष के लिये समय आ पहुँचा है, और उसे अपने कार्य को पूरा करने के लिये सामर्थ्य की जरूरत थी। यह प्रार्थना की घड़ी है।

यीशु पिता की इच्छा पूरी करने के द्वारा उसकी महिमा करेगा, इसका अर्थ यह भी हो कि उसे क्रूस का दर्द सहना पड़े। उसका क्रूस को स्वीकारना किसी प्रकार का भाग्यवादी सिद्धान्त नहीं है; वरन् वास्तव में वह किस प्रकार पिता द्वारा प्रदत्त अधिकार का अभ्यास करता है। वह शहीद की मृत्यु नहीं मरा पर स्वेच्छा से उसके देह धारण के कारण को पूरा करने के लिये अपने पिता की महिमा की: संसार के पापों के लिये क्रूस पर उसकी बलिदानी मृत्यु।

यूहन्ना 17: 3 के अनुसार अनंत जीवन क्या है? परमेश्वर को जानने का अर्थ क्या है?

_____

_____

प्रथम और सबसे आगे, यीशु हमें बतलाता है कि अनन्त जीवन परमेश्वर का हमारे व्यक्तिगत ज्ञान में निहित है। यह काम या ज्ञान के द्वारा उद्धार नहीं है लेकिन यह प्रभु को जानने का अनुभव है जिस मकसद से प्रभु ने हमारे लिये क्रूस पर कार्य किया है। यह ज्ञान पिता के साथ एक व्यक्तिगत संबंध द्वारा मध्यस्थता किया गया है। हमारा मानव स्वभाव ज्ञान को तथ्यों और विस्तारों पर सीमित करना है, लेकिन यहाँ पर यीशु का लक्ष्य कुछ गहरा और अधिक परिपूर्ण है: परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध। यीशु का पहला आगमन

मानवता को अर्थपूर्ण खोज हेतु मार्ग दर्शन देना और परमेश्वर के ज्ञान को और एक दूसरे की एकता को बचाना कि ऐसा ज्ञान अगुवाई करे।

परमेश्वर के विषय में जानना और परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से जानना में क्या फर्क है? आप के पास क्या अनुभव है, जिसने परमेश्वर को जानने में आपकी मदद की है?

सोमवार **अक्टूबर 15**

यीशु अपने चेलों के लिये प्रार्थना करता है

पढ़ें यूहन्ना 17: 9-19, अपने चेलों के विषय में विशेष रूप से यीशु क्या प्रार्थना कर रहा है?

_____

_____

_____

यीशु बाद में अपने चेलों के लिए प्रार्थना करता है, जो आने वाले दिनों में उसपर से विश्वास खो देने के गंभीर खतरे में हैं, जब स्वयं यीशु उनके साथ शारीरिक रूप से नहीं रहेगा। इस कारण वह उन्हें अपने पिता की देखभाल में समर्पित करता है।

यीशु की प्रार्थना इस संसार में उनकी सुरक्षा के लिये है। जैसे कि यीशु संसार के लिये प्रार्थना नहीं करता है क्योंकि वह जानता है कि पिता की इच्छा का विरोध होगा (1यूहन्ना 5: 19)। परन्तु इसलिए कि चेले इसी संसार में अपनी सेवकाई देंगे, यीशु प्रार्थना करता है कि वे संसार में बुराई से बचें। वाकई में परमेश्वर संसार के लिये चिंतित है क्योंकि वह इसका उद्धारक है। परन्तु सुसमाचार का प्रचार उनकी गवाही पर बांधी हुई है जो संसार में जायेंगे और सुसंवाद का प्रचार करेंगे। यही कारण है यीशु को उनके लिये मध्यस्थता करने की जरूरत है ताकि बुराई उन्हें हरा न सके (मत्ती 6: 13)।

फिर भी, एक चेला हार गया। उस शाम को यीशु ने कहा था कि उन में से एक ने उसे विश्वासघात के लिये ठान लिया है (यूहन्ना 13: 18-30)। तथापि यीशु सच्चाई का उल्लेख करता है कि पवित्रशास्त्र ने यहूदा के विश्वासघात की भविष्यवाणी की है (भजन 41: 9), यहूदा भाग्य का मारा नहीं था। अंतिम बियारी के दौरान, यीशु ने उसे प्रेम और मित्रवत भाव से अपील की (यूहन्ना 13: 26-30)। "फसह के भोज के समय विश्वासघात करने वाले के उद्देश्य को प्रगट करने के द्वारा यीशु ने अपने ईश्वरत्व को साबित किया। उसने कोमलता के साथ यहूदा को चेलों की सेवकाई में शामिल किया।

लेकिन प्रेम की आखिरी अपील अनसुनी की गई।"– Ellen G. White, The Desire of Ages, P. 720.

यह जानते हुए कि ईर्ष्या और डाह चेलों में विभाजन ला सकता है, जैसा एक बार यह हो चुका है, यीशु उनकी एकता के लिये प्रार्थना करता है। "हे पवित्र पिता, अपने उस नाम से जो तू ने मुझे दिया है, उनकी रक्षा कर, कि वे हमारी नाई एक हों" (यूहन्ना 17: 11)। ऐसी एकता मानव उपलब्धि से बढ़कर है। यह ईश्वरीय अनुग्रह के वरदान और परिणाम स्वरूप ही हो सकता है। उसकी एकता पिता एवं पुत्र की एकता में स्थिर है, और यह एकता भविष्य में प्रभावशाली सेवा के लिये अत्यावश्यक शर्त है।

सच्चाई में उनका पवित्रीकरण और शुद्धिकरण भी सेवकाई के लिये अत्यावश्यक है। चेलों के हृदय में परमेश्वर के अनुग्रह का कार्य उन्हें बदल देगा। परन्तु यदि उन्हें परमेश्वर की सच्चाई की गवाही देनी है, उन्हें स्वयं उस सच्चाई के द्वारा बदल जाना चाहिए।

"संसार का न होने" का क्या अर्थ है? हमारे विषय, हमारा जीवन, और जैसा हम जीते हैं हमें कैसे "संसार का न होना" बनाता है?

मंगलवार **अक्टूबर 16**

"उनके लिये जो मुझपर विश्वास करेंगे"

यीशु ने अपने चेलों के लिये प्रार्थना करने के बाद अपनी प्रार्थना को विस्तार दिया, "जो इनके वचन के द्वारा मुझपर विश्वास करेंगे" (यूहन्ना 17: 20)।

पढ़ें यूहन्ना 17: 20-26. उनके लिये यीशु की महानत्तम इच्छा क्या थी जो बाद में सुसमाचार वचन पर विश्वास करते? यह क्यों इतना महत्त्वपूर्ण है कि यह प्रार्थना पूरी हो जाये ?

जैसा पिता और पुत्र एक हैं, यीशु ने प्रार्थना की कि भविष्य के विश्वासी भी एक हो। यूहन्ना रचित सुसमाचार में कुछ स्थानों पर, यीशु ने पिता एवं पुत्र की एकता का उल्लेख किया। वे एक दूसरे से अलग होकर स्वतंत्र रूप से कभी नहीं काम करते, परन्तु जो भी करते हमेशा एक होकर करते हैं (यूहन्ना 5: 20-23)। वे उस हद तक पतित मानव के लिए प्रेम को साझा करते हैं कि पिता ने संसार के लिये पुत्र को देना चाहा, और पुत्र ने भी इस निमित अपना प्राण देना चाहा (यूहन्ना 3: 16, 10: 15)।

इस प्रार्थना में यीशु जिस एकता का उल्लेख करता है प्रेम और उद्देश्य की एकता है जिस प्रकार पिता और पुत्र के बीच में है। "यदि आपस में प्रेम रखोगे, तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो" (यूहन्ना 13:35)। प्रेम में इस एकता को उजागर करना, दोनों पिता के साथ और यीशु के साथ उनके संबंध को आम जनता में दृढ़ करेगा। उनकी सच्ची एकता का प्रदर्शन सुसमाचार की सच्चाई की प्रेरक गवाही प्रदान करनी चाहिए।"– Andreas J. Kostenberger, John Baker Exegetical Commentary on the NewTestament, P. 498. यही है जिस प्रकार संसार जान जायेगा कि यीशु ही उद्धारकर्त्ता है। दूसरे शब्दों में यह एकता जिसके लिये यीशु ने प्रार्थना की अदृश्य नहीं हो सकती। सुसमाचार की सत्यता के विषय में संसार को कैसे आश्वस्त किया जा सकता है यदि यह परमेश्वर के लोगों के बीच में प्रेम और एकता को देख न सके?

अनंत सच्चाई के रंगमंच पर लोगों को पूर्ण एकता में खड़े होने के लिये परमेश्वर अगुवाई कर रहा है। परमेश्वर रूप-रेखा तैयार करता है कि उसके सभी लोग विश्वास की एकता में आ जायें। क्रूस पर उठाये जाने से ठीक पूर्व मसीह की प्रार्थना थी कि उसके चेले एकता में बने रहें। जैसा कि वह स्वयं पिता के साथ था, ताकि संसार विश्वास करे कि पिता ने उसे भेजा है। यह बहुत ही हृदय स्पर्शी और अद्‌भुत प्रार्थना युगों से चली आ रही है। आज हमारे दिन तक; जैसे कि उसने कहा: "मैं केवल इन्हीं के लिये विनती नहीं करता, परन्तु उनके लिये भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे।"

"कितनी ईमानदारी के साथ मसीह के विश्वस्त अनुयायी अपने जीवन में इस प्रार्थना के उत्तर को ढूंढ़ेंगे।"– Ellen G. White, Testimonies for the Church, Vol. 4, P. 17.

यहाँ पर पेश की गई एकता के प्रकार को पहुँचने में मदद के लिये हमारे जीवन में और कलीसिया में हम क्या कर रहे हैं? निश्चित मात्रा में स्वयं की मृत्यु हम प्रत्येक के लिये क्यों निर्णायक है यदि हम चाहते हैं कि, जैसा इसको होना चाहिए, हमारी कलीसिया में एकता बनी रहे?

बुधवार **अक्टूबर 17**

मसीहियों में एकता

पढ़ें मरकुस 9:38-41 और यूहन्ना 10:16. प्रेरित यूहन्ना अलगाववाद के विषय, हमें सिखाने के विषय, और त्वरित निर्णय लेने के विषय कि यीशु का सच्चा अनुयायी कौन है- यीशु की क्या प्रतिक्रिया है?

यूहन्ना 17 में यीशु की प्रार्थना को समझने की प्रवृति सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्ट लोगों में है जो सीधे तौर पर उनकी कलीसिया की एकता को लागू करते हैं। तीन दूतों के संदेश को संसार में फैलाने के लिये हमें कलीसिया के तौर पर संगठित होने की जरूरत है। इस बिन्दु पर कुछ विवाद है।

परन्तु अन्य मसीहियों के साथ एकता के विषय में क्या है? यीशु ने जो प्रार्थना की उस प्रकाश (संदर्भ) में उन्हें हम कैसे संबद्ध कर सकते हैं?

प्रश्न ही नहीं, हम विश्वास करते हैं कि हमारे अलावा अन्य कलीसियाओं में भी परमेश्वर के विश्वस्त जन हैं। इसके अतिरिक्त, बाईबल स्पष्ट करती है कि बेबीलोन में भी परमेश्वर के विश्वस्त जन हैं: "उस में से निकल आओ; कि तुम उसके पापों में भागी न हो, और उसकी विपत्तियों में से कोई तुम पर आ न पड़े" (प्रका० 18:4)।

प्रकाशितवाक्य की किताब के अनुसार हम जानते हैं कि जो यीशु के नाम का अंगीकार करते हैं उनके बीच महान स्वधर्म त्याग होगा, और अन्त के दिनों में बहुत से झूठे मसीही एक होंगे और प्रका० 13:1-17 में वर्णित सताहट होगी। अत: ऐडवेंटिस्ट हमेशा दूसरी कलीसियाओं के साथ संगठित होने में सतर्कता बरतते हैं जैसा दुनियावी आन्दोलन में देखा गया है।

तब हमें दूसरी संस्थाओं से कैसे जुड़ना चाहिये? दूसरे मसीहियों के साथ मिलकर सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्टों के काम करने के विषय में एलेन जी० व्हाईट ने कम से कम इस खास विषय पर लिखा: "जब मानव प्रतिनिधि अपनी इच्छा को परमेश्वर की इच्छा के हवाले करता है, पवित्रआमा उनके हृदयों में प्रभाव छोड़ेगा जिनकी वह सेवकाई करता है। मुझे दिखाया गया है कि हमें महिलाओं के मसीही संयम संघ के कामगारों को नहीं अलग करना चाहिये। उनके साथ जुड़े रह कर पूर्ण संयम की तरफ से सातवाँ दिन विश्राम से संबंधित हमारा पद नहीं बदलता है, और संयम के विषय में उनके पद के लिये उनकी प्रशंसा हम दिखा सकते हैं। संयम से संबंधित प्रश्न पर उन्हें हमारे साथ होने के लिये आमंत्रित कर और दरवाजा खोलने के द्वारा संयम की पंक्ति में हम उनकी मदद को सुरक्षा प्रदान करते हैं; और हम से मिलकर वे नई सच्चाई को सुनेंगे जिसका पवित्र आत्मा हृदयों में स्थापित करने के लिये इंतजार कर रहा है।" Welfare Ministry, P. 163.

यद्यपि वह खास समय पर खास विषय पर बातें कर रही थी, वह नियमों को देती है जिसका हम पालन करने के द्वारा सीख सकते हैं कि दूसरे

मसीहियों से हमारा संबंध कैसा हो खास कर किसी विषय पर एकता के सवाल पर।

पहला, हम उनके साथ सामाजिक हित पर काम कर सकते हैं। दूसरा, यदि हमें उनसे जुड़ना ही है तो यह हमारे विश्वास और अभ्यास को प्रभावित नहीं करना चाहिए। तीसरा, हमें इस "एकता" को दूसरों तक बहुमूल्य सच्चाई को पहुँचाने के लिये करना चाहिए, जिसके (बहुमूल्य सच्चाई) द्वारा हम आशीषित हुए हैं।

बृहस्पतिवार **अक्टूबर 18**

प्रेम में साझा किया हुआ एक विश्वास

यूहन्ना 17:3 में यीशु ने कहा कि परमेश्वर को जानना अनंत जीवन है। पढ़ें 1यूहन्ना 2:3-6, परमेश्वर को जानने को अर्थ क्या है? हमारे दैनिक जीवन में परमेश्वर के हमारे ज्ञान को कैसे प्रदर्शित करेंगे ?

_____

_____

साधारणतया, आज जब लोग स्वयं को समाज में कानून-सम्मत नागरिक समझते हैं, ये ही लोग बहुधा परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने के लिये बाईबलीय प्रतिज्ञाओं को कमत्तर आंकेंगे। कुछ लोग तर्क भी करते हैं कि परमेश्वर का अनुग्रह परमेश्वर की आज्ञाओं से मुक्त हो गया है। परन्तु यह बाईबलीय शिक्षा नहीं है: "आज्ञाओं को मानना परमेश्वर को जानने की शर्त नहीं है परन्तु एक संकेत है कि हम परमेश्वर/यीशु को जानते हैं और उसे प्यार करते हैं। इसलिये, परमेश्वर का ज्ञान प्रायोगिक ज्ञान ही नहीं पर यह कार्य की ओर अगुवाई करता है।" – Ekkehardt Mueller, The letters of John, P. 39. यीशु ने स्वयं जोर देकर कहा: "यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।" "जिसके पास मेरी आज्ञाएँ हैं और वह उन्हें मानता है, वही मुझसे प्रेम रखता है;" (यूहन्ना 14:15,21)। "तो इसी से हम जानते हैं कि हम परमेश्वर की संतानों से प्रेम रखते हैं, क्योंकि परमेश्वर से प्रेम रखना यह है कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें; और उसकी आज्ञाएँ कठिन नहीं।" (1यूहन्ना 5:2-3)।

पढ़ें यूहन्ना 13:34,35. यीशु ने अपने चेलों को कौन-सी नई आज्ञा दी और यीशु के अनुयायियों के बीच एकता के विचार को यह किस प्रकार संबद्ध करती है?

_____

_____

पड़ोसियों से प्रेम करना कोई नई चीज नहीं थी मूसा को दी गई आज्ञा में यह पाया जा सकता है (लैव्य० व्य० 19: 18)। जो नया है वह है चेलों के लिये आदेश कि वे एक दूसरे से प्रेम करें जैसा उसने हमसे प्रेम किया है। यीशु का आत्म बलिदान संबंधी प्रेम का उदाहरण मसीही समुदाय के लिये नई नीति है।

हमारे सामने क्या ही अद्‌भुत मानदंड स्थापित है। यीशु का जीवन कार्यरूप में प्रेम का एक व्यावहारिक प्रदर्शन था। अनुग्रह का संपूर्ण कार्य प्रेम की एक निरंतर सेवा है, जो आत्मत्याग और स्वयं के इंकार का प्रयास है। हम अनुमान लगा सकते हैं कि मसीह का जीवन दूसरों की अच्छाई के लिये आत्म-बलिदान और प्रेम का एक अटूट प्रदर्शन था। सिद्धान्त जिसने मसीह को प्रवृत किया, एक दूसरे के साथ उनके लेन-देन में उसके लोगों को प्रवृत्त करना चाहिए। संसार के लिये ऐसा प्रेम क्या ही सशक्त गवाही हो सकता है। हमारे बीच में ऐसा प्रेम एकता के लिये क्या ही सशक्त ऊर्जा प्रदान करता है।

हम दूसरों के लिये आत्म-बलिदान संबंधी प्रेम को प्रकट करना कैसे सीख सकते हैं, जिसे परमेश्वर ने प्रकट किया?

शुक्रवार **अक्टूबर 19**

अतिरिक्त अध्ययन : Ellen G. White, "God's Law Immutable, PP. 443-446, In the Great Controversy Read the articles, "Denominations, Relations to others," PP. 763, 764. and "Roman Catholic Church," P. 1110, in the Ellen G. White Encyclopedia.

"यद्यपि सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्ट कलीसिया बहुत-सी स्थानीय कलीसियाओं के साथ एक विश्वव्यापी कलीसिया है, एडवेंटिस्ट लोग सार्वभौमिक कलीसिया होने का दावा नहीं करते हैं। सार्वभौमिक कलीसिया किसी संस्था से वृहत्तर होता है। यह दृश्यमान और अदृश्यमान है यह उन लोगों को शामिल करता है जो यीशु में विश्वास करते और उसका अनुसरण करते हैं। यह खास धर्म विज्ञानी विषय ऊँचा किया जाता है यदि हम मसीहियों के बीच स्वधर्मत्याग पर विचार करें जो प्रकाशितवाक्य की किताब में मार्मिक ढंग से संबोधित किया गया है। प्रकाशितवाक्य 12 की शुद्ध कलीसिया प्रकाशित वाक्य 17 की वेश्या से तुलना की गई है। बेबीलोन महानगर मेमने के दुल्हन से तुलना की गई है यह है प्रकाशितवाक्य 21 और 22 का नया यरुशलेम या पवित्र नगर। पहली सदी में, सार्वभौमिक कलीसिया संभवत: बिलकुल दृश्यमान रही होगी, इसे देखना बहुत मुश्किल और कठिन है, उदाहरणार्थ मध्ययुगीन काल में।

इसलिए, ऐडवेंटिस्ट लोग परमेश्वर की सच्ची कलीसिया की अवधारणा को अपने पंथ या समाज में सीमित नहीं करते हैं और न ही वे स्वत:

इसे अन्य कलीसियाओं में विस्तार देते हैं। परमेश्वर की सच्ची कलीसिया उन लोगों को शामिल करती है जो वाकई में उस पर विश्वास करते हैं। परमेश्वर उन्हें जानता है। दूसरी ओर ऐडवेंटिस्ट दावा करते हैं कि वे प्रकाशितवाक्य 12: 17, 12-14 के शेष अंतिम समय के खास दृश्यमान लोग हैं। इस शेष के स्थानीय और सार्वभौमिक चरित्र (पात्र) हैं (प्रका० 2:24 एवं 12: 17,"- Ekkehardt Mueller, "The Universality of the church in the New Testament," inAngel Manuel Rodriguez, ed, and Message, Mission, and Unity of the Church. P. 37.

विचार-विमर्श के लिये प्रश्न:-

1. यूहन्ना 17 में यीशु की प्रार्थना की पूर्णता हमारी कलीसिया के लिये क्यों इतनी महत्त्वपूर्ण है? पहली सदी की कलीसिया की एकता के लिये यीशु की इच्छा क्या है और आज हमारी कलीसिया के लिये उसकी इच्छा क्या है ?
2. क्या आपकी कलीसिया ने दूसरी कलीसियाओं के साथ किसी खास विषय पर कार्य किया है? वह कितना अच्छा रहा है? आवश्यकतानुसार उनके साथ हम कैसे काम कर सकते हैं बगैर हमारे विश्वास से समझौता किये?
3. महान संघर्ष में इस कथन के क्या प्रभाव हैं? हमारे बीच में इसे कैसे वास्तविक बना सकते हैं? "यदि परमेश्वर के हिमायती लोग ज्योति को प्राप्त करेंगे जैसा यह उनके वचन में से उन पर चमकता है, वे उस एकता को छू सकेंगे जिसके लिये मसीह ने प्रार्थना की, जिसका वर्णन प्रेरित करता है, "और मेल के बंधन में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो। एक ही देह है, और एक ही आत्मा, जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आत्मा है, एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा।" इफि० 4: 3-5." - Ellen G . White, the Great Controversy, P. 379.

सारांश:- यूहन्ना 17 में यीशु की महायाजकीय प्रार्थना एक याद दिलाने वाली है कि यीशु अभी भी कलीसिया की एकता के लिये चिंतित है। उसकी प्रार्थना हमारी प्रार्थना होनी चाहिए, और परमेश्वर के वचन में हमारे विश्वास को मजबूत होने के लिये हमारा प्रयास होना चाहिए। एक दूसरे के लिये प्रेम भी प्रत्येक के साथ हमारे संबंध को वर्णन करना चाहिए, इसमें दूसरे मसीही भी शामिल हैं हमारे धर्मविज्ञान की विभिन्नता कोई भी हो।